© INTERNATIONAL JOURNAL FOR RESEARCH PUBLICATION & SEMINAR
ISSN: 2278-6848 | Volume: 06 Issue: 02 | May- June 2015

Impact Of Jainism On Different Parts Of Education

Dr Somnath Das , Email- soumo.sans@gmail.com

Abstract : जैन दर्शन एक प्राचीन भारतीय दर्शन है | बौध धरम की ही तरह यह वैदिक दर्शन का विरोधी है | जैन दर्शन के अनुसार शिक्षा वह है जी व्यक्ति व् समाज के लिए लाभप्रद हो उसके चरित्र को अच्छा बनाने में लाभदायक हो | अज्ञान सभी प्रकार के दुखों का कारण है तथा व्यक्ति को इसी अज्ञान से मुक्ति दिलाने वाली प्रकिर्या शिक्षा है | इस दर्शन के अनेक दार्शनिक एवं शैक्षिक विचार अव्यवहारिक प्रतीत होते हैं पर व्यक्ति की विभिन्न के आधार पर शिक्षण , विभिन्न विषयों को पाठ्यक्रम में स्थान, मनोविज्ञानिक शिक्षण विधियों का व्यक्तित्व विकास जैसे अनेक विचार आज भी शैक्षिक व्यवस्था में भी प्रासंगिक है |

Introduction : जैन दर्शन का विकास , वैदिक दर्शन में आयी विकृतियों के प्रति लोगों का आक्रोश के कारण हुआ | भारतीय जन-जीवन को इस दर्शन में बहूत अधिक प्रभावित किया , यही कारण आज भी देश में बड़ी संख्या में जैन धरम के मानने वाले निवास करते हैं | इस दर्शन ने भारतीय शिक्षा पर भी अपना प्रभाव डाला |

जैन दर्शन एवं शिक्षा के उद्देश्य :

1. सम्यक ज्ञान प्राप्त करना : सम्यक ज्ञान जैन दर्शन द्वारा प्रतियादित त्रिरत्नो में से एक है और यह उनके अनुसार शिक्षा का महत्वपूरण उद्देश्य भी है | सम्यक का अर्थ है अच्छा और उचित | इस प्रकार सम्यक ज्ञान वह है जो व्यक्ति को अज्ञान से मुक्त कर उसे मोक्ष की और अग्रसर करता है |

2. सम्यक दर्शन का विकास : यह भी जैन दरहण का त्रिरत्न है और शिक्षा का उद्देश्य भी | सम्यक दर्शन को निमंलिखित अर्थों में प्रयुक्त किया गया है :

- गुरु के प्रति श्रधा रखना
- भावात्मक पक्ष का विकास करना

सम्यक ज्ञान यदि व्यक्ति के बौधिक पक्ष के साथ सम्बन्ध रखता है तो सम्यक दर्शन का सम्बन्ध उसके भावनात्मक पक्ष के साथ है |

मानव होने के नाते मनुष्य का संतेगातामक पक्ष का विकास भी आवश्यक है और जैन दर्शन के अनुसार इसका विकास करना शिक्षा का महत्वपूर्ण उद्देश्य है |

3. सम्यक चरित्र का विकास करना : इसका विकास तब होता है जब व्यक्ति सम्यक ज्ञान एवं सम्यक दर्शन के लक्ष्य को प्राप्त कर लेता है | जैन दर्शन के अनुसार सम्यक चरित्र का अर्थ है:

- व्यक्ति को अहितकर कार्यों से हटाना
- हितकर कार्यों की और प्रवृत करना

और येही जैन शिक्षा का उद्देश्य भी है |

इस प्रकार त्रिरत्नो के माध्यम से व्यक्ति का संतुलित विकास करना ही जैन शिक्षा का उद्देश्य है |

4. कठोर अनुशाशन के लिए तैयार करना :

जैन दर्शन द्वारा प्रतियादित पंचमहाव्रत जैसे नियम बहूत कठोर हैं , इनका पालन किये बिना जीवन का लक्ष्य प्राप्त करना संभव नही है , अतः जैन शिक्षा का उद्देश्य व्यक्ति को कठोर अनुशाशन के लिए तैयार करना है |

5. सर्व्धरम समभाव की भावना का विकास करना :

इनके बहुतात्वावादी सिधांत से यह परिलक्षित होता है जैन धर्म सर्व धर्म समभाव में विश्वाश करता है | अतः शिक्षा का उद्देश्य व्यक्ति में सभी धर्मों के पार्टी समानता की भावना का विकास करना है इससे उसके द्रष्टिकोण को व्यापक बनाने में मदद मिलती है |

जैन दर्शन एवं पाठ्यक्रम :

जैन दर्शन में जीव एवं अजीव दोनों के अस्तित्व को स्वीकार किया गया है | अतः इनके पाठ्यक्रम में भौतिक एवं अध्यात्मिक दोनों प्रकार के विषयों को स्थान दिया गया है . इस दर्शन के अनुसार पाठ्यक्रम में निम्नलिखित विषयों को स्थान दिया जाना चाहिए :

I. मनोविज्ञान (Psychology)
II. प्रयावरण अध्यन
III. अन्तरिक्ष विज्ञानं
IV. जीवविज्ञान
V. गतिविज्ञान
VI. इतिहास
VII. गणित
VIII. निति शिक्षा
IX. शिल्प शिक्षा
X. कला विज्ञानं

जैन दर्शन एवं शिक्षा विधियाँ :

जैन दर्शन में ज्ञान के पांच प्रकार बताये गए हैं , उन सभी प्रकार के ज्ञान को प्राप्त करने के लिए अलग अलग विधियों को प्रतिवादित किया गया है . ये विधियाँ ही जैन दर्शन के अनुसार शिक्षण की विधियाँ कही जा सकती है , कुछ मुख्य विधियाँ इस प्रकार है -

1. वस्तुओं को प्रत्यक्ष द्वारा प्रमाणित करना
2. प्रत्यार्भारण तथा प्रश्भिसिं द्वारा ज्ञान प्राप्त करना

3. आगमन एवं निगमन की विधि
4. साहचर्य द्वारा
5. अर्थग्रहण द्वारा
6. संवेदना द्वारा

इसके अतिरिक्त पुस्तकों के अध्यन , व्याख्यान तथा चर्चा आदि के द्वारा भी शिक्षा दी जा सकती है

जैन दर्शन एवं अनुशाशन :

जैन दर्शन आत्म इकस को महत्व देता है जिसके लिए कठोर अनुशाषित जीवन व्यतीत करना आवश्यक है , इसके अंतर्गत जिन पंच महा व्रतों की चर्चा की गयी है उसका पालन भी कठोर अनुशाशन के बिना संभव नही है . अतः जैन दर्शन कठोर अनुशाशन का समर्थक है

जैन दर्शन एवं शिक्षक :

जैन दर्शन अध्यापक को महत्वपूरण स्थान देता है क्यूंकि वोही विद्यार्थी में सम्यक ज्ञान, सम्यक दर्शन , सम्यक चरित्र का विकास कर सकता है . वो ही उसे पंच महावर्तों का पालन करने की प्रेरणा दे सकता है तथा आतम विकास की और अग्रसर कर सकता है , उन्होंने दो प्रकार के शिक्षकों का उल्लेख किया है -

1. आचार्य : इसका कार्य है विद्यार्थियों को अनुशाषित करना एवं उनके चरित्र निर्माण के लिए विभिन्न गतिविधियों का आयोजन करना
2. उपाध्याय : इनका कार्य है शिक्षण , यह विद्यार्थियों की विभिन्न जिज्ञासाओं का समाधान करता है तथा अपने विषय का जानकार होता है

जैन दर्शन एवं विद्यार्थी :

जैन दर्शन का मानना है की पूर्व जन्मों के कर्मों के कारन सभी विद्यार्थियों में भिन्नंता पाई जाती है , लेकिन सभी में एक ही आत्मा निवास करती है , विद्यार्थियों में पाई जाने वाली विविधता के कारन अध्यापक को प्रत्येक विद्यर्थी की अवश्यक्तों को ध्यान में रखते हुए उसे शिक्षित करना चाहिए , जैन दर्शन के अनुसार विद्यार्थी में गुरु के प्रति श्रधा एवं समर्पण भाव तथा विनामार्ता होनी चाहिए , उसे अनुशासित होना चाहिए , ज्ञान प्राप्ति के बाद उसके गर्व में संयम होने चाहिए .

जैन दर्शन की कमियां :

1. जैन दर्शन कठोर अनुशाशन का समर्थन करता है जो की मनोविज्ञान के सिधान्तों के प्रतिकूल है
2. वर्तमान सन्दर्भ में शिक्षण एवं अन्य गतिविधियों के आयोजन के लिए अलग अलग अद्यापक की व्यवस्था करना अव्यवहारिक है .

3. ये शिक्षा दर्शन शिक्षा की प्रकिर्या में शिक्षार्थी में विद्यार्थी की उपेक्षा अध्यापक को अधिक महत्व देती है जबकि मनोविज्ञान की दृष्टि से शिक्षा प्रिकिर्य में विद्यार्थी का स्थान मुख्या है
4. इनके द्वारा प्रतिपादित पाठ्यक्रम में सहितियक एवं कलात्मक विषयों का कम महत्व दिया गया है
5. ये दर्शन सम्यक ज्ञान द्वारा मोक्ष की प्राप्ति को शिक्षा का उद्देश्य देता है , जिसको प्राप्त करना कठिन है .

conclusion:

निष्कर्ष रूप में यह कहा जा सकता है विज्ञानं सम्बन्धी विषयों पर बल इस शिक्षा दर्शन को वर्तमान प्रस्तिथियों में और अधिक प्रासंगिक बना देती है . यदपि जैन शिक्षा दर्शन द्वारा प्रतिवादित विचार देखने में जटिल एवं अव्यवहारिक प्रतीत होते हैं पर उनका गहन विवेचन उन्हें सरल एवं वर्तमान सन्दर्भ में प्रासंगिक बना देता है .

REFERENCE

1. The six systems of Indian philosophy- Maxmular
2. Indian philosophy-S.radhakrishna
3. History of Indian Phiosophy- S.N. Dasgupta
4. The essentials of Indian philosophy- M.Hiriyana
5. The begingings of Indian philosophy- Edgerton franklin
6. Acharya kundkund- Pravachansara
7. Dundas,paul .The jains(new York,1992)
8. Jain,pankaj,jainism and environmental ethics.union seminary quarterly review.2011